वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 223 | बुधवार 10 दिसम्बर 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

अंतर-महाविद्यालयीय वाद-विवाद एवं पोस्टर प्रतियोगिता का सफल आयोजन

डॉ. राजन महान ने युवाओं को अहिंसा और सत्य के मूल्य अपनाने का आह्वान किया

वाद-विवाद एवं पोस्टर प्रतियोगिता में प्रतिभागियों की प्रभावी प्रस्तुति, विजेताओं का सम्मान एवं कार्यक्रम का सफल समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान विश्वविद्यालय महिला परिषद (रूवा) द्वारा रूवा परिसर स्थित शक्ति स्तंभ में अंतर-महाविद्यालयीय वाद-विवाद एवं पोस्टर प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों से आए लगभग 100 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम रूवा की अध्यक्ष डॉ. अमला बत्रा के नेतृत्व तथा संयोजक डॉ. संगीता शर्मा के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार, लोकप्रिय मीडिया विशेषज्ञ एवं जनसंचार विभाग के प्रतिष्ठित प्राध्यापक डॉ. राजन महान रहे, जिनकी प्रेरक उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा को और बढ़ा दिया। उन्होंने महात्मा गांधी के अहिंसा सिद्धांत की आधुनिक समय में प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को सत्य, संयम और करुणा जैसे मूल्यों को जीवन में अपनाने का संदेश दिया। साथ ही उन्होंने मीडिया में प्रसारित भ्रामक सूचनाओं से सावधान रहने तथा तथ्यों के सत्यापन को अत्यंत आवश्यक बताया। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय ''जब तक पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ बनी रहेंगी, तब तक महिलाएँ सच्ची समानता हासिल नहीं कर सकतीं'' रखा गया। प्रतिभागियों ने इस विषय पर तार्किक, सशक्त एवं संवेदनशील तर्क प्रस्तुत करते हुए लैंगिक समानता, सामाजिक संरचनाओं और बदलते मूल्य-बोध पर सारगर्भित विमर्श किया। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने पितृसत्ता से सहभागिता की ओर तथा अद्भुत महिलाएँः रूढ़ियों को तोड़ती हुईं जैसे प्रेरणादायक विषयों पर अपने रचनात्मक और संदेशप्रधान पोस्टरों के माध्यम से महिलाओं की भूमिका, क्षमता और सशक्तिकरण के विविध आयामों को प्रभावी रूप में अभिव्यक्त किया। उनकी प्रस्तुतियों ने दर्शकों व निर्णायकों दोनों को विशेष रूप से प्रभावित किया। निर्णायक मंडल में प्रो. उर्वशी शर्मा, डॉ. जिज्ञासा मीणा, डॉ. प्रीति चौधरी, डॉ. अमिथी जसरोतिया और डॉ. सारिका कौल शामिल थीं। सभी निर्णायकों ने प्रतिभागियों का मूल्यांकन भाषा-शैली, तर्कशक्ति, विषय की समझ, प्रस्तुति-कौशल और सृजनात्मकता के आधार पर किया। कार्यक्रम के अंत में विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। रूवा की अध्यक्ष डॉ. अमला बत्रा तथा संयोजक डॉ. संगीता शर्मा ने सभी अतिथियों, निर्णायकों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता जताई।

सहयोग—मानव संबंधों की सबसे बड़ी शक्ति

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर ही उसकी पहचान बनती है। लेकिन समाज को मजबूत और संगठित रखने वाली सबसे बड़ी शक्ति यदि कोई है, तो वह है—सहयोग। सहयोग केवल किसी का काम बाँट लेना नहीं, बल्कि मन से, भावना से, सद्भावना के साथ जुड़ जाना है। यही सहयोग मानव संबंधों की जड़ में वह मीठा जल है जो रिश्तों को जीवंत, स्थायी और सुंदर बनाता है।

सहयोग रिश्तों की नींव है

किसी भी संबंध की मजबूती इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें एक-दूसरे के साथ चलने की कितनी भावना है। परिवार हो, मित्रता हो, पड़ोस हो या समाज—जहाँ सहयोग होता है, वहाँ विश्वास अपने आप जन्म लेता है। सहयोग एक-दूसरे के दुख-सुख को साझा करता है और संबंधों में नई ऊर्जा भर देता है।

सहयोग से दूरियाँ नहीं, नजदीकियाँ बढ़ती हैं

जब हम किसी के काम में हाथ बढ़ाते हैं, तो यह केवल काम कम करना नहीं होता, बल्कि दो दिलों के बीच की दूरी कम करना होता है। एक छोटा-सा सहयोग, एक छोटी-सी मदद भी दिलों के बीच पुल बना देती है। यही पुल संबंधों को लंबे समय तक जोड़कर रखता है।

सहयोग—मानवता का असली रूप

मानवता तभी जगती है जब मन में सहयोग की भावना हो। किसी भी आपदा में, किसी भी कठिन परिस्थिति में लोग जिस तरह एक-दूसरे के लिए खड़े होते हैं, वह दुनिया को यह बताता है कि मनुष्य की महानता उसकी धन-दौलत में नहीं, बल्कि उसकी सहयोग भावना में छिपी है।

अहंकार तोड़ता है, सहयोग जोड़ता है

जहाँ अहंकार होता है, वहाँ मनुष्यों के बीच दीवारें खड़ी हो जाती हैं। लेकिन जहाँ सहयोग होता है, वहाँ दीवारें गिरने लगती हैं। सहयोग मन की उस कोमलता का नाम है जो ईर्ष्या, द्वेष और स्वार्थ जैसे नकारात्मक भावों को दूर कर देता है।

सहयोग से बढ़ता है सामूहिक विकास

किसी भी समाज, संस्था या परिवार की प्रगति अकेले व्यक्तियों की नहीं होती। सहयोग वह शक्ति है जो सभी को साथ लेकर चलती है। जब लोग पारस्परिक सहयोग से काम करते हैं तो परिणाम अधिक प्रभावी, स्थायी और व्यापक होते हैं। सहयोग न केवल काम हल्का करता है, बल्कि खुशियाँ भी दोगुनी कर देता है।

सहयोग आत्मीयता का एहसास कराता है

जब कोई कह देता है—मैं हूँ न तो यह वाक्य किसी के मन में अद्भुत सुरक्षा और विश्वास भर देता है। यही सहयोग का सार है—किसी को यह एहसास दिलाना कि वह अकेला नहीं है। यही एहसास मानवीय रिश्तों को गहराई और ऊष्मा प्रदान करता है।

समापन

सहयोग केवल एक मानवीय गुण नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन है। यह जीवन को सरल, सुंदर और सार्थक बनाता है। हमारे संबंध तभी मजबूत बनते हैं जब उनमें सहयोग की धारा बराबर बहती रहती है। इसलिए कहा गया है ''सुख बाँटने से बढ़ता है और दुःख बाँटने से घटता है।'' यही सहयोग का चमत्कार है, यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

अनिल माथुर
ज्वाला-विहार, जोधपुर।

भगवान की भव्य शोभायात्रा के साथ निकली विशाल घटयात्रा

अयोध्या नगरी में हुआ विश्व शांति महायज्ञ का शुभारंभ

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महा-महोत्सव के अंतर्गत सोमवार प्रातः श्री जिनेन्द्र भगवान की भव्य शोभायात्रा एवं विशाल घटयात्रा नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गई, जो उत्साह, श्रद्धा और आध्यात्मिक उल्लास से परिपूर्ण रही। शोभायात्रा सुभाष गंज से प्रारंभ होकर मंडी प्रांगण स्थित अयोध्या नगरी पहुँची, जहाँ मंत्रोच्चार के साथ मंडप व मंडल शुद्धि सम्पन्न कर विश्व शांति महायज्ञ का शुभारंभ किया गया। शोभायात्रा में आगे-आगे कलश धारण किए मातृशक्ति की सहभागिता विशेष रूप से आकर्षण का केंद्र रही। उनके पीछे विभिन्न पात्र अपने रथों पर विराजमान थे तथा विशाल मुनि संघ संघ—नायक निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज की अगुवाई में शोभायात्रा को पावन बना रहा था। मार्ग में श्रद्धालुओं ने मुनि संघ का श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सभा को संबोधित करते हुए मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज ने कहा कि ''ध्वजारोहण जीवन का सबसे बड़ा मंगल चरण है। यह अवसर व्यक्ति के भाग्य को बदलने की क्षमता रखता है।'' उन्होंने कहा कि प्रकृति स्वयं कहती है—अपने जीवन को इतना अच्छा बनाओ कि संसार सुंदर हो जाए। उन्होंने भक्तों को संदेश दिया कि मंदिर जाकर थकान नहीं, बल्कि उत्साह और ऊर्जा लेकर लौटना चाहिए, क्योंकि धर्म मनुष्य के जीवन में मंगलमय प्रवाह लाता है। उन्होंने कहा, ''दुनिया में दृश्य का महत्व है, परंतु हमारे यहाँ अदृश्य का। धन धर्म का फल है, इसलिए धर्म रूपी वृक्ष की नियमित सिंचाई आवश्यक है। प्रतिदिन पुण्य कमाएँ, वरना कुबेर का खजाना भी समाप्त हो सकता है।'' उन्होंने पंच कल्याणक महोत्सव को जीवन का मंगलाचरण बताते हुए कहा कि यह दुर्लभ अवसर वर्षों बाद प्राप्त होता है और इसका प्रत्येक क्षण मानव जीवन को दिशा देने वाला है। जैन समाज मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि समाज की

वर्षों की तपस्या आज ध्वजारोहण के अवसर के साथ पूर्णता की ओर बढ़ रही है। उन्होंने इसे समुदाय का सौभाग्य बताते हुए कहा कि भगवान जिनेन्द्र देव के पंच कल्याणक महोत्सव का आयोजन समाज के लिए ऐतिहासिक क्षण है। कार्यक्रम में जैन समाज अध्यक्ष राकेश कांसल, उपाध्यक्ष अजित वरोदिया, महामंत्री राकेश अमरोद, कोषाध्यक्ष सुनील अखाई, मंत्री शैलेन्द्र श्रागर, संजीव भारिल्ल, मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार, संयोजक मनोज रन्नौद, उमेश सिंघई, मनीष सिंघई, श्रेयांस घैला, टींगूमिल संस्थान के पदाधिकारी तथा अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। समाजजनों द्वारा मुनि संघ को श्रीफल भेंट कर मंगल कामनाएँ व्यक्त की गईं। महोत्सव के अंतर्गत सभी प्रमुख पात्रों की पात्र-शुद्धि एवं इन्द्र-प्रतिष्ठा प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भाईसाहब द्वारा विधिपूर्वक कराई गई। उन्होंने कहा कि पाषाण से भगवान बनने की प्रक्रिया को ही पंच कल्याणक प्रतिष्ठा कहते हैं। आज पात्र रूप में सहभागी होना सभी के लिए सौभाग्य की बात है। इस अवसर पर भगवान जिनेन्द्र के माता-पिता, इन्द्र-इन्द्राणी और विविध पात्रों की प्रतिष्ठा सम्पन्न कर महायज्ञ की पवित्र प्रक्रिया प्रारंभ हुई। धार्मिक उल्लास से परिपूर्ण यह आयोजन अयोध्या नगरी के मंडी प्रांगण में निरंतर जारी है, जिसमें श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या प्रतिदिन उपस्थित होकर पुण्यलाभ प्राप्त कर रही है।

महावीर इंटरनेशनल डडूका द्वारा रा उ प्रा वि उदेला मे 111 स्वेटर वितरित

बाल वाटिका का लोकार्पण

डडूका. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल डडूका द्वारा बच्चों के सुनहरे भविष्य प्रोजेक्ट के तहत रा उ प्रा वि उदेला (अरथूना) के 111 छात्र छात्राओं को फरीदाबाद केंद्र के संरक्षक एवं वरिष्ट अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष वीर महेंद्र कुमार जैन के सौजन्य से वितरित किए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंतरराष्ट्रीय डायरेक्टर अजीत कोठिया नॉलेज शेयरिंग एवं ई चौपाल ने की, मुख्य अतिथि सी बी ई ओ माया सैमसन, विशिष्ट अतिथि बांसवाड़ा जिला कॉर्डिनेटर सुंदरलाल पटेल,ए सी बी ई ओ मनोज कुमार जैन, सुरेश पाटीदार, केंद्र डडूका अध्यक्ष वीर रणजीत सिंह सोलंकी, सचिव वीर अशोक कुमार रावल, मनीष पाटीदार,प्रधानाध्यापक नरेश पाटीदार, मनीष पाटीदार तथा पी ई ई ओ मणिलाल ताबियार थे। प्रारंभ में स्वागत उद्बोधन नरेश पाटीदार ने दिया। माया सैमसन ने महावीर इंटरनेशनल के सेवा कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की ओर अजीत कोठिया तथा सुंदरलाल पटेल सहित डडूका केंद्र के सभी वीर साथियों का उदेला स्कूल के छात्र छात्राओं का स्वेटर वितरण कार्यक्रम हेतु चयन करने पर हार्दिक आभार व्यक्त किया। इससे पूर्व अतिथियों ने विद्यालय में नवनिर्मित बाल वाटिका एवं सेल्फी प्वाइंट का फीता काट कर उदघाटन किया। सुरेश पाटीदार एवं मनोज जैन ने महावीर इंटरनेशनल से अरथूना ब्लॉक के विद्यालयों के विविध प्रोजेक्ट्स हेतु आर्थिक सहयोग करने का भी आह्वान किया। विद्यालय के छात्र छात्राओं ने इस अवसर पर सोशियल मीडिया के दुष्प्रभाव आधारित रोचक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम संचालन लोकेश पटेल ने किया। आभार प्रधानाध्यापक नरेश पाटीदार ने किया।

लायंस क्लब कोटा सेंट्रल द्वारा लैंस प्रत्यारोपण शिविर आयोजित - 202 लोगों की आँखों का किया गया परीक्षण

आजाद शेरवानी. शाबाश इंडिया

कोटा। लायंस क्लब कोटा सेंट्रल एवं जिला अंधता निवारण समिति के संयुक्त तत्वाधान में सोमवार को गोपालपुरा, मंडाना में नेत्र परीक्षण एवं मोतियाबिंद शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया क्लब अध्यक्ष लायन बी पी मीणा एवं सचिव लायन राजकुमार गुप्ता ने बताया कि इस शिविर

में ग्रामपंचायत के 13 गाँव के 202 लोगों का नेत्र परीक्षण डॉ विशाल स्नेही द्वारा करवाया। शी शक्ति डीसी मधु ललित बाहेती ने बताया कि इस शिविर में नेत्र परीक्षण के दौरान 48 व्यक्तियों को मोतियाबिंद रोग से ग्रसित पाया गया जिन्हें चयनित कर क्लब द्वारा ही निशुल्क मोतियाबिंद शल्य चिकित्सा हेतु विशाल आई हॉस्पिटल विज्ञान नगर कोटा में लाया गया डॉ विशाल स्नेही द्वारा इन सभी रोगियों का मोतियाबिंद ऑपरेशन कर लैंस प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक किया गया शिविर का समापन मंगलवार को किया गया जिसमें सभी रोगियों को ऑपरेशन पश्चात रखी जाने वाली आवश्यक सावधानियों के बारे में जानकारी प्रदान की तथा नेत्र सुरक्षा हेतु सभी को काले चश्मे वितरित किये गये शिविर में लायन चंद्रबेल मीणा, लायन चंदा बारवाडिया, लायन सुनीता शर्मा, लायन दिनेश खुवाल, लायन राधा खुवाल ने उपस्थित होकर अपना सहयोग प्रदान किया।

वेद ज्ञान

अच्छी सेहत के लिए नित्य टहलें

उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए टहलना एक सरल, प्रभावी और आरामदेह व्यायाम है। आज के भौतिकवादी युग में, जब स्वचालित वाहनों का अत्यधिक प्रयोग बढ़ने लगा है और लोगों का पैदल चलना कम हो गया है, तब से मनुष्य अनेक शारीरिक और मानसिक बीमारियों का शिकार होता जा रहा है। ऐसे समय में यदि कोई व्यक्ति अपनी सेहत को सुरक्षित और बेहतर बनाए रखना चाहता है, तो उसे उचित भोजन, सही दिनचर्या और नियमित रूप से प्रतिदिन टहलने की आदत अवश्य अपनानी चाहिए। पूर्णतः स्वस्थ रहने के लिए प्रातःकाल किसी पार्क, उद्यान, मैदान या स्वच्छ स्थान पर कम से कम एक घंटा पैदल चलना अत्यंत लाभदायक माना गया है। पैदल चलना ऐसा व्यायाम है जिसके लिए किसी आयु सीमा की आवश्यकता नहीं होती। बच्चे, युवा, वयस्क और वृद्ध सभी इससे समान रूप से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। टहलने से शरीर की सभी मांसपेशियां सक्रिय होती हैं, जिससे शरीर में चुस्ती और ऊर्जा का संचार होता है। पैदल चलना विशेषकर पैरों की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, क्योंकि पूरे शरीर का बोझ पैर ही वहन करते हैं। नियमित रूप से चलने वाले व्यक्तियों में पैरों की बनावट सुडौल और संतुलित दिखाई देती है। टहलने से न केवल शरीर सशक्त होता है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर होता है। पैदल चलने से मस्तिष्क की कोशिकाओं को अधिक ऑक्सीजन मिलती है, जिससे विचार शक्ति में वृद्धि और मन की चंचलता में कमी आती है। व्यक्ति स्वयं को हल्का, तनावमुक्त और सकारात्मक महसूस करता है। यह केवल एक शारीरिक व्यायाम ही नहीं, बल्कि मानसिक अवसाद और थकान को दूर करने का प्रभावी उपाय भी है। इसलिए विशेषज्ञों का मत है कि टहलना मन और शरीर दोनों के लिए समान रूप से जरूरी है। चिकित्सकीय दृष्टि से भी पैदल चलना अत्यंत महत्वपूर्ण है। लगभग पैंतीस वर्ष की आयु के बाद शरीर की रक्तवाहिनियां कठोर होने लगती हैं, जिससे रक्त प्रवाह में हृदय को अधिक मेहनत करनी पड़ती है और उच्च रक्तचाप की समस्या उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। नियमित टहलने से रक्तवाहिनियों की लोच सामान्य बनी रहती है और फेफड़ों का व्यायाम स्वाभाविक रूप से होता रहता है।

संपादकीय

गोवा नाइट क्लब अग्निकांड : एक दर्दनाक सच्चाई

पणजी से महज 25 किमी दूर अरपोरा स्थित बर्च बाय रोमियो लेननाइट क्लब में गत शनिवार को लगी भीषण आग ने 25 जिंदगियों को असमय बुझा दिया। गोवा की शांत समुद्री छटा और सुकून की पहचान के बीच यह हादसा न केवल एक काला अध्याय बनकर उभरा, बल्कि पूरे देश के सामने यह कठोर प्रश्न भी खड़ा कर गया कि क्या हम अपने मनोरंजन स्थलों की सुरक्षा को लेकर इतने लापरवाह होते जा रहे हैं? सबसे पहला और

महत्वपूर्ण सवाल यही है कि आखिर इस भीषण आग की वजह क्या थी। प्रारंभिक जांच में खुलासा हुआ है कि क्लब के अंदर कथित रूप से इलेक्ट्रिक पटाखे फोड़े गए थे। चिंगारी तेजी से छत तक पहुंची, जहां लकड़ी की संरचना ने आग को और भड़का दिया। कुछ ही क्षणों में पूरा परिसर धुएं से भर गया। क्लब के छोटे दरवाजे, अत्यधिक भीड़ और अपर्याप्त निकासी मार्ग इस त्रासदी के सबसे घातक कारण साबित हुए। अधिकांश मौतें दम घुटने से हुईं, क्योंकि लोगों को बाहर निकलने के लिए कोई स्पष्ट रास्ता नहीं मिला। यह हादसा केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि कई स्तरों पर फैली लापरवाही, उदासीनता और नियमों की खुली अवहेलना का परिणाम है। क्लब के मालिक सौरभ लूथरा और गौरव लूथरा के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है, जबकि चार कर्मचारियों को भी गिरफ्तार किया गया है। किंतु सवाल यह है कि क्या ज़िम्मेदारी केवल इन्हीं पर आकर रुक जाती है? क्या स्थानीय प्रशासन, अग्निशमन विभाग और लाइसेंसिंग अथॉरिटी अपनी भूमिका से पूरी तरह मुक्त हैं? रिपोर्टों के अनुसार क्लब के पास अनिवार्य अग्नि-सुरक्षा एनओसी और शराब परोसने की अनुमति तक नहीं थी, फिर भी वह निर्बाध रूप से चल रहा था। यह साफ दशार्ता है कि नियमों की अनदेखी, भ्रष्टाचार और निरीक्षण-तंत्र की कमजोरियां कितनी गहरी हैं। सबसे बड़ी चोट उन परिवारों पर पड़ी है जिन्होंने अपने अपनों को इस हादसे में खो दिया। मृतकों में 4 पर्यटक, 14 कर्मचारी और 7 अज्ञात लोग शामिल बताए गए हैं, जिनमें कई उत्तराखंड, झारखंड, असम और नेपाल के रहने वाले थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रत्येक मृतक के परिजन को दो लाख रुपये और घायलों को पचास हजार रुपये की अनुग्रह राशि की घोषणा की है। परंतु आर्थिक मुआवजा किसी भी टूटे हुए परिवार का दर्द कम नहीं कर सकता। असल आवश्यकता एक ऐसी व्यवस्था की है जो यह सुनिश्चित करे कि ऐसे हादसे दोबारा न हों। इसके लिए सुरक्षा मानकों को न केवल सख्त करना होगा, बल्कि उन्हें ईमानदारी से लागू करना भी होगा। नाइट क्लबों और मनोरंजन स्थलों के प्रबंधकों को नियमित प्रशिक्षण दिया जाए, कर्मचारियों को आपातकालीन स्थितियों के लिए तैयार रखा जाए, और ग्राहकों को भी प्रवेश के समय निकासी मार्गों की जानकारी देना अनिवार्य किया जाए। स्थानीय पंचायतों और नगरपालिकाओं को निरीक्षण को औपचारिकता न मानकर वास्तविक दायित्व समझना होगा, ताकि कोई भी प्रतिष्ठान बिना सुरक्षा जांच के संचालित न हो सके।

-राकेश जैन गोदिक

परिदृश्य

सामंजस्य बैठाना समय की मांग

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

भारतीय संस्कृति, सभ्यता और हमारे पूर्वजों की प्रेरणाएं, मार्गदर्शन, कहावतें और जीवन-दर्शन हमारे लिए अनमोल धरोहर हैं। इनमें जीवन की हर परिस्थिति का समाधान छिपा होता है। समय का तकाजा, समय बड़ा बलवान, आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है जैसी कहावतें केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन के गहरे संदेश हैं। यदि हम इनका सार समझें तो ये हमें बुराइयों से बचाने और सकारात्मकता अपनाने की दिशा में प्रेरित करती हैं। समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता। परिस्थितियां बदलती रहती हैं, और उन्हीं के अनुरूप स्वयं को ढालना समझदारी है। जब परिवार में दो पीढ़ियों के बीच उम्र का अंतर बढ़ता है तो वैचारिक मतभेद स्वाभाविक रूप से सामने आते हैं। ऐसे में बड़ों को चाहिए कि वे पारिवारिक एकता और संतुलन बनाए रखने के लिए नई पीढ़ी के विचारों के साथ सामंजस्य स्थापित करें। बदलते समय के अनुरूप सकारात्मक विचारों को अपनाना आवश्यक है, क्योंकि जो समय को समझ नहीं पाता, समय भी उसे पीछे छोड़ देता है। नई पीढ़ी के विचारों को अपनाने का अर्थ यह नहीं कि उनकी हर बात से सहमति जताई जाए। हमें उनकी सकारात्मक सोच को प्रोत्साहित करना है और नकारात्मक प्रवृत्तियों को संवाद और समझ के माध्यम से दूर करना है। पूर्व की तरह आदेशात्मक या तनावपूर्ण व्यवहार अपनाने के बजाय प्रेरक, सौम्य और मार्गदर्शक रवैया अधिक प्रभावी होता है। जब दोनों पीढ़ियाँ एक-दूसरे को समझने का प्रयास करती हैं, तब परिवार में एकता, मजबूती और आपसी विश्वास बढ़ता है, जिससे सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्तर पर प्रगति सुनिश्चित होती है। पुरानी पीढ़ी के लिए नई सोच को स्वीकार करना कई बार चुनौतीपूर्ण होता है। वे अपने समय को श्रेष्ठ मानते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि बुजुर्गों का सम्मान परिवार की नींव है। इसके विपरीत युवा आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता देते हैं। तेज जीवन गति और सीमित पारिवारिक समय के कारण पीढ़ियों के बीच संवाद का अभाव बढ़ रहा है। युवाओं को देश की वास्तविक परिस्थितियों का ज्ञान है और वे अंधानुकरण के बजाय तर्क के आधार पर विचारों को स्वीकार करना चाहते हैं। राजनीति, भ्रष्टाचार और असमानता को देखकर वे बदलाव की इच्छा रखते हैं। पश्चिमी देशों में पीढ़ी-अंतराल इतना गहरा है कि युवा और बुजुर्ग अलग-अलग रहना पसंद करते हैं। युवा कमाई शुरू करते ही स्वतंत्र जीवन चाहते हैं, जबकि बुजुर्ग पेंशनभोगी घरों में रहते हैं। भारत में भी यह स्थिति धीरे-धीरे बढ़ रही है, जो संयुक्त परिवार व्यवस्था के लिए चुनौती है। इसलिए आवश्यक है कि युवाओं को ऐसी शिक्षा और संस्कार दिए जाएँ जिससे वे अपने परिवार और मूल्यों से जुड़े रहें। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भी बार-बार इस बात पर जोर दिया गया है कि 20वीं सदी की सोच 21वीं सदी के भारत का भविष्य तय नहीं कर सकती। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने ज्ञान के साथ कौशल और लचीलेपन पर जिसे महत्व दिया है, वह समयानुसार बदलाव का स्पष्ट उदाहरण है। बदलती प्रणालियों के साथ विकसित होना ही प्रगति का मार्ग है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बदलते आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नई पीढ़ी के विचारों के साथ सामंजस्य बैठाना समय की मांग है। सकारात्मक वैचारिकता अपनाना, संवाद बढ़ाना और समय की गति के साथ स्वयं को ढालना ही सफलता और परिवारिक सद्भाव का आधार है।

घमंड का सचः श्मशान की खामोशी से बड़ी कोई सीख नहीं

जब इंसान के मन में घमंड की पहली लपट उठती है, जब उसे लगता है कि उसकी कीमत दुनिया में सबसे ज्यादा है, जब उसके कदम जमीन पर नहीं, हवा में पड़ने लगते हैं–उसी समय एक बार श्मशान की ओर चला जाना चाहिए। वहाँ की आग, वहाँ की राख और वहाँ की सदियों पुरानी खामोशी इंसान की आँखें खोल देती है। श्मशान की राह पर जैसे ही कदम पड़ते हैं, भीतर एक सन्नाटा उतर जाता है। वहाँ खड़े होकर एहसास होता है कि जिसने कल दुनिया हिला रखी थी, आज वह चुपचाप मिट्टी के नीचे सो रहा है। जिसने कभी अपने पद, शक्ति, पैसे और प्रसिद्धि पर गर्व किया था, आज उसका कोई नाम लेने वाला भी नहीं। श्मशान के हर कोने में बिखरी राख एक कहानी कहती है–कि तुम चाहे जितने बड़े बन जाओ, अंत में वापस इसी धरती में मिल जाना है। यह जगह तुम्हें बताती है कि घमंड करने वाले तुम पहले नहीं हो, तुमसे भी ज्यादा ताकतवर, बुद्धिमान और प्रभावशाली लोग इसी चिता पर खाक बन चुके हैं। वहां खड़ी हर चिता एक आईना है–जो इंसान को उसकी औकात दिखा देती है। यह एहसास भी वहीं होता है कि असली ताकत विनम्रता में है, अहंकार में नहीं। जो व्यक्ति विनम्र रहता है, वह लोगों के दिलों में बसता है। जो घमंडी होता है, वह सिर्फ लोगों की बातों में बसता है–वह भी बुरे उदाहरण की तरह। श्मशान यह समझाता है कि जिंदगी का हर पल उधार है। सांसें हमारी अपनी नहीं, बस ईश्वर की दी हुई एक सीमित गिनती है। जो लोग इस गिनती पर भी घमंड करते हैं, वे सबसे बड़े मूर्ख हैं। इसलिए, जब भी तुम्हें लगे कि तुम बहुत बड़े हो गए हो, तुम्हारे बिना दुनिया रुक जाएगी, लोग तुम्हारे सामने झुकेंगे–तो बस एक बार श्मशान का रास्ता पकड़ लो। वहाँ खड़ी चिताएं ये सिखा देंगी कि असली महिमा विनम्रता में है, और असली सम्मान वही पाता है जो जमीन से जुड़ा रहता है। घमंड इंसान को ऊपर नहीं उठाता–वह तो उसे धीरे-धीरे भीतर से खोखला कर देता है और अंत में उसी राख में बदल देता है जिसे हवा उड़ा ले जाती है। इसलिए खुद को बड़ा मत समझो, बल्कि अपने कर्म बड़े बनाओ। क्योंकि आखिर में याद रखा जाता है इंसान का चरित्र–न कि उसका घमंड।

– नितिन जैन, संयोजक – जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा), जिलाध्यक्ष – अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, पलवल, मोबाइलः 9215635871

ब्लॉक स्तरीय ग्रीन ग्रोथ प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

रायपुर. शाबाश इंडिया। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के आदेशानुसार ब्लॉक स्तरीय ग्रीन ग्रोथ स्किल आभियान प्रतियोगिता का मंगलवार को महाराणा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रायपुर में आयेजन किया गया। प्रभारी जितेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीबीईओ रायपुर नरोत्तम दाधीच, विशिष्ट अतिथि आरपी हेमराज नागोरा ,अध्यक्षता रमेश चांवला पीईईओ रायपुर ने की मंच संचालन जानकी लाल त्रिपाठी ने किया। निर्णायक राजेंद्र कुमार सेठिया, नवीन कुमार बाबेल,देवराज धोबी,राम रघुनाथ थे। इस अवसर पर सीबीईओ दाधीच ने कहा की ऐसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के जीवन का सर्वांगीण विकास करती है। आशु भाषण, चित्रकला, प्रश्नोत्तरी, निबंध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। पंजीयन कार्य अलका शर्मा,मुकेश कुमार शर्मा ने संपादित किया।

प्रतिदिन निकल रही है नगर में प्रभात फेरी

नसीराबाद (रोहित जैन). शाबाश इंडिया। पूज्य सिंधी पंचायत द्वारा पिछले 18 दिनों से नगर में प्रातः 7:00 बजे से प्रभात फेरी निकाली जाती है जो आगामी 2 जनवरी तक निकाली जाएगी प्रभात फेरी नगर में रोजाना अलग-अलग मार्गो से होकर निकलती है। मंगलवार को प्रभात फेरी अनाज मंडी और पटेल उद्यान से निकाली गई । प्रभात फेरी में शामिल महिला ,-पुरुष भगवान के भजन गाते हुए व नृत्य करते हुए चल रहे थे।, प्रभात फेरी का नगर वासियों ने बढ़-चढ़कर स्वागत किया प्रातः काल पूरा नगर ही भक्ति मय बन जाता है , पूज सिंधी पंचायत के मुखी काली बाबानी ने बताया कि पूरे समाज में इन 40 दिनों में उत्साह और उमंग के साथ झूलेलाल के भजन कीर्तन और भक्ति का माहौल है, प्रभात फेरी संचालक अशोक लोंगवानी और राजेश लहरवानी ने बताया की जय किशन गुरु नानी, नानक टहलवानी,हरीश कृपलानी ,नरेश नरसिंहनी ,मुकेश संग तानी, विमल संगतानी रमेश लहरवानी ,नारी साधवानी, दिलीप साधवानी ,अशोक चांदनी, किशोर चेलानी, रोहित खेड़ा जानी,ओम प्रकाश लालवानी, रमेश लालवानी ,अनिल सेवारमणि ,रवि भागनानि ,काली खोतवानी लाल बाबानी,सोनी ,प्रकाश मेडिकल ,रूपा बाबानी कालू तेजवानी, विष्णु भगनानी, मोहित बाबानी,पुरन,और बहनों में गोपी तेजवानी ,मीना लोंगवानी,निशा खेराजानी,कविता बाबानी दिव्या शिवनानी,गीता लोंगवानी ,पूनम भागचंदानी ,विनु तेजवानी, सीमा लालवानी, जसोदा देवी बाबानी ,सविता बाबानी,नीता बाबानी,कविता बाबानी ने अपनी सेवाएं दी।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को बिहार चुनाव में मिली ऐतिहासिक सफलता पर दी गई बधाई

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

बिहार चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिली अभूतपूर्व सफलता के अवसर पर, राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा परिषद, भारत सरकार के सदस्य डॉ. निर्मल जैन ने सोमवार को रक्षा मंत्री माननीय राजनाथ सिंह के सरकारी आवास पर जाकर उन्हें अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित कीं। डॉ. जैन ने इस मुलाकात के दौरान कहा कि बिहार की जनता ने माननीय नरेंद्र मोदी जी व राजनाथ सिंह जी के कुशल नेतृत्व, विश्वास और विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता पर अपनी मुहर लगाई है। उन्होंने इस विजय को देश में सुशासन, सुरक्षा और स्थिरता की जीत बताया। राजनाथ सिंह जी ने भी डॉ. निर्मल जैन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह जीत जनता के आशीर्वाद और पार्टी कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत का परिणाम है। उन्होंने आश्वस्त किया कि बिहार के सर्वांगीण विकास के लिए केंद्र सरकार निरंतर प्रयास करती रहेगी। मुलाकात के दौरान भविष्य में सड़क सुरक्षा से संबंधित विभिन्न जनहित कार्यों और अभियानों पर भी विचार-विमर्श हुआ। डॉ. जैन ने बताया कि वह देशभर में सड़क सुरक्षा जागरूकता को और मजबूत करने के लिए सतत प्रयासरत रहेंगे।

मानव भव को सार्थक बनाने के लिए जीवन को कषाय मुक्त बनाना होगाः प्रतिभाश्रीजी म.सा.

अहिंसा भवन में साध्वी मण्डल के प्रवचन, आज सुबह सुभाषनगर स्थानक के लिए विहार

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

हम सौभाग्यशाली है कि हमे मानव भव प्राप्त हुआ है। हम कामना तो मोक्ष पाने की करते है लेकिन स्वयं को कषायों से मुक्त नहीं कर पाते है। जब तक मोह,माया,राग,द्वेष जैसे कषायों का त्याग नहीं करेंगे हमारी गति नहीं सुधर सकती है। हमारे कर्म ही हमारी गति तय करेंगे। ये विचार जैन सिद्धांताचार्य मधुर गायिका तपस्वी साध्वी रत्ना श्री प्रतिभाश्रीजी म.सा. ने मंगलवार सुबह शास्त्रीनगर स्थित अहिंसा भवन में प्रवचन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हमे चिंतन करना चाहिए कि हम जो कर्म कर रहे है वह हमे कौनसी गति में ले जाने वाले है। कर्म के आधार पर चार गति नरक, तिर्यंच, मनुष्य ओर देव गति मिलती है। हमे मानव भव मिला है तो धर्म आराधना ओर सद्कर्म करने चाहिए ताकि फिर से मनुष्य गति या देव गति प्राप्त हो सके। जब तक कर्म क्षय नहीं होंगे भव भ्रमण समाप्त नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि हम स्वयं को श्रावक तो कहते है पर उसके लिए निर्धारित 12 व्रतों में से कितनों की पालना हम कर रहे है इस पर चिंतन करना चाहिए। साध्वीश्री ने भीलवाड़ावासियों की भक्ति भावना की सराहना करते हुए कहा कि यहां करीब एक सप्ताह प्रवास की सोचकर आए थे लेकिन इतना विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करते हुए करीब एक पखवाड़ा होने आया है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2026 का चातुर्मास चित्तौड़गढ़ सेंती क्षेत्र में करने की भावना है। उन्होंने जीवन का यर्थाथ समझाते हुए प्रेरणादायी भजन खाली हाथ आया है ओर खाली हाथ जाएगा की प्रस्तुति भी दी। प्रवचन में साध्वी प्रेक्षाश्रीजी ने भी धर्म संदेश देते हुए जिनशासन सेवा करते रहने की प्रेरणा प्रदान की। सुश्रावक प्रकाशचन्द्र बाबेल ने गुरूदेव जैन दिवाकर चौथमलजी म.सा. की स्तुति में भजन की प्रस्तुति दी। अतिथियों का स्वागत अहिंसा भवन श्रीसंघ के अध्यक्ष महेन्द्रसिंह छाजेड़ ने किया। संचालन श्रीसंघ के मंत्री कानसिंह चौधरी ने किया। महासाध्वी मण्डल बुधवार 10 दिसम्बर सुबह 7 बजे अहिंसा भवन से सुभाषनगर जैन स्थानक के लिए विहार करेंगा। वहां 10 व 11 दिसम्बर का प्रवास रहेगा ओर इसके बाद अजमेर रोड स्थित दिवाकर धाम पहुंचने के भाव है।

साध्वीश्री ने भीलवाड़ावासियों की भक्ति भावना की सराहना करते हुए कहा कि यहां करीब एक सप्ताह प्रवास की सोचकर आए थे लेकिन इतना विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करते हुए करीब एक पखवाड़ा होने आया है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2026 का चातुर्मास चित्तौड़गढ़ सेंती क्षेत्र में करने की भावना है।

संसार में सभी प्राणी दुखी हैं वे सुख चाहते हैं : मुनि निर्मोह सागर जी

राघौगढ़. शाबाश इंडिया

प्राचीन ऐतिहासिक धर्म नगरी राघौगढ़ में संत सुधा सागर धाम स्थित संभवनाथ जिनालय परिसर में चल रहे श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ के तीसरे दिन आज प्रातः 9:30 बजे आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनि निर्मोह सागर जी ने मंगल प्रवचन करते हुए कहा इस संसार में सभी प्राणी दुखी हैं और सब सुख चाहते हैं। हर प्राणी अपने दुखों से भयभीत है। आपने कहा पंडित दौलत राम जी कृत छहढ़ाला की प्रथम ढ़ाल में संसारी प्राणियों की दशा का विस्तार से उल्लेख किया है। मुनिराज जी ने कहा सुख दो प्रकार के होते हैं एक भौतिक सुख होता है। यह भौतिक सुख वह कहलाता है हम संसार में रहकर भोग विलास के साधन जुटा लेते हैं और इसे ही सुख मानने लगते हैं। भौतिक सुख से हमारा कल्याण नहीं होने वाला है। दूसरा सुख होता है आध्यात्मिक सुख। यह आध्यात्मिक सुख हमें भगवान की भक्ति एवं त्याग तपस्या से मिलता है। आध्यात्मिक सुख ही सच्चा सुख है। मुनि निर्मोह सागर जी महाराज ने कहा आचार्य मानतुंग ने भक्तांबर स्त्रोत के माध्यम से भगवान की सच्ची भक्ति की। उस भक्ति का प्रभाव हुआ कि एक के बाद एक 48 ताले खुलते चले गए। इसी प्रकार महारानी मैना सुंदरी ने श्री सिद्ध चक्र मंडल विधान के माध्यम से भगवान की भक्ति की उसका प्रभाव हुआ कि उनके पति महाराजा श्रीपाल का कुष्ठ रोग दूर हो गया। आपने यह भी कहा कि मैना सुंदरी ने एकमात्र अपने पति के स्वास्थ्य लाभ के लिए कामना नहीं की थी बल्कि सभी के लिए की थी।

जेएसजी सनशाइन सीजन-8 में टीम 'सुपर जायंट्स' बनी चैंपियन

एमडी फार्म पर दूधिया रोशनी में 8 दिनों तक चले रोमांचक मुकाबलों का 'कार्निवल' के साथ हुआ समापन

ब्यावर. शाबाश इंडिया

जेएसजी सनशाइन द्वारा आयोजित अंडरआर्म क्रिकेट टूर्नामेंट के सीजन-8 का भव्य समापन हुआ। एमडी फार्म्स पर पिछले 8 दिनों से दूधिया रोशनी में खेली जा रही इस प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला और समापन समारोह बोहरा गार्डन में एक अनूठे 'फन कार्निवल' इवेंट के रूप में मनाया गया, जहां पूरे परिवार के लिए मनोरंजन और पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। संस्था अध्यक्ष राहुल ओस्तवाल ने बताया कि इस प्रतियोगिता में युवम ने तूफानी शतक बनाकर जूनियर किड्स वर्ग के फाइनल में टीम आरव मेडतवाल जीत दिलाई। इस मैच का मुख्य आकर्षण नन्हे खिलाड़ी युवम रहे, जिन्होंने मात्र 37 गेंदों पर नाबाद शतक जड़कर अपनी टीम को कप दिलाया। सीनियर किड्स कैटेगरी में टीम मोहित मेहता ने टीम अयान श्रीश्रीमाल को हराकर जीत हासिल की। महिला वर्ग में टीम वर्षा बडजात्या का दबदबा महिला वर्ग में खिताबी भिड़ंत बेस्ट ऑफ थ्री फॉर्मेट में हुई। इसमें वर्षा बड़जात्या की टीम ने टीम हर्षा को 2-1 से हराकर चैंपियनशिप जीती। वहीं पुरुष वर्ग में कुल 6 टीमों के बीच कड़ा मुकाबला हुआ। फाइनल मैच में टीम सुपर जायंट्स ने शानदार खेल दिखाते हुए टीम स्ट्राइकर्स को हराया और सीजन-8 की ट्रॉफी अपने नाम की। मीडिया प्रभारी अमित गोधा ने बताया कि प्रतियोगिता में निरंतर ऑलराउंड प्रदर्शन के लिए दिनेश नाहटा को 'प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट' के खिताब से नवाजा गया। बेस्ट बैट्समैन का खिताब विशाल नाहर को और बेस्ट बॉलर का खिताब प्रदीप सांड को दिया गया। प्रत्येक मैच में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मैन/किड/वूमन ऑफ द मैच दिया गया। समापन समारोह में अतिथि के रूप में दिलीप , सिद्धार्थ श्रीश्रीमाल, नेमीचंद बोहरा, पीयूष रांका, कमल छाजेड़, प्रवीण मकाना, विशाल कांकरिया, पंकज गादिया, अजय डोसी और उज्ज्वल काला उपस्थित थे। अंपायर नवीन बागरेचा, गौरव कोठारी और लविश लोढ़ा का मंच पर सम्मान किया गया। इस सफल आयोजन में जेएसजी सनशाइन के संस्थापक वैभव सुखलेचा, अध्यक्ष राहुल ओस्तवाल मंत्री भूपेश भंसाली कोषाध्यक्ष वीरेंद्र बोहरा, उपाध्यक्ष सुमित श्रीश्रीमाल, सह-सचिव विमल कांकरिया, अमित गोधा पूर्व अध्यक्ष पंकज डेडिया, मनीष मेहता, अरुण रुनीवाल, विक्रम सांखला, प्रतीक खटोड़, दिनेश नाहटा, महेंद्र नाहटा , शैलेंद्र जिंदानी, वैभव मेडतवाल मनोज डुगरवाल विकास श्री श्रीमाल सहित सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

भारत के सुप्रसिद्ध थिएटर राजमंदिर में झोटवाड़ा के साथियों ने देखी धुरंधर पिक्चर

जयपुर. शाबाश इंडिया

सोमवार दिनांक 8 दिसंबर 2025 को रात्रि 8:45 वाले शो में भारत के सुप्रसिद्ध थिएटर राजमंदिर में झोटवाड़ा के हम साथ साथ के ग्रुप मेंबरों ने धुरंधर पिक्चर देखी। पिक्चर से पूर्व सभी ने TOC कॉफी शॉप पर इस सर्दी के मौसम में सबसे पहले तो गर्मा गरम मूंगफली गजक आदि के साथ गरमा गरम कॉफी का आनंद लिया और सभी ने बड़े ही मनोरंजन के साथ इस पिक्चर का आनंद लिया पिक्चर बहुत ही अच्छी और शानदार मूवी थी खास करके इसमें जो इसमें कॉन्सेप्ट लिया गया वह मुंबई में होटल ताज एवं रेलवे स्टेशन पर हुए हमले आतंकवादी अजमल कसाब और नकली नोट कैसे पाकिस्तान से बनाकर के भारत आते हैं इसके बारे में बताया गया पिक्चर का आनंद धीरज कुमार सीमा पाटनी, निर्मल तारा पांड्या, दिनेश नीलम काला, राकेश अचला रावका, प्रमोद नीरू छाबड़ा, मुकेश नीलम सेठी, सुगन रंजीत पापड़ीवाला और राजकुमार पाटनी ने लिया।

कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा कम्बल वितरण

जयपुर. शाबाश इंडिया। कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा जरूरतमंद लोगों को कम्बल वितरण किया जा रहा है। कमलाबाई चैरिटेबल ट्रस्ट दीन-दुखियों, लाचार व जरूरतमंदों की सेवा के लिए सदा तत्पर रहा है। चाहे वो शिक्षा से वंचित बालिकाओं को शिक्षा दिलाना हो, भोजन से वंचित जरूरतमंदों को भोजन पहुंचाना हो, गर्मी के दिनों में चप्पल पहनाना हो या फिर सर्दियों में ठिठुरते जरूरतमंद लोगों को कम्बल ओढ़ाना हो। इसी क्रम में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी योजना वस्त्र बैंक के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्तियों को कम्बल, गर्म कपड़ों का वितरण करने जा रहे हैं। इस पूर्णिमा (4दिसम्बर 2025) गुरुवार से आने वाली हर एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति आदि तिथियों और पर्वों पर सर्दी खत्म होने तक जारी रहेगा। ईश्वर के आशीर्वाद व आप के सहयोग से यह पुण्य कार्य हर वर्ष सर्दियों में किया जाता है..! आप भी अपने बुजुर्गों की पुण्यतिथि पर, जन्मदिन पर ,एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या या संक्रांति पर इस पुनीत कार्य का हिस्सा बन सकते हैं। अपनी श्रद्धा अनुसार 1, 5, 50, 100 कम्बल या इसकी सेवा राशि का सहयोग कर सकते हैं। 200/- एक कम्बल सहयोग सेवा राशि।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

भारतीय स्टेट बैंक मुहाना शाखा ने यातायात सुगमता के लिए 20 बैरीकेट भेंट किए

जयपुर. शाबाश इंडिया

भारतीय स्टेट बैंक मुहाना शाखा ने अपने सामाजिक सुरक्षा दायित्वों के अंतर्गत मंडी प्रशासन और मुहाना पुलिस थाने को यातायात सुगमता के लिए 20 बैरीकेट सौंप कर अपनी जिम्मेदारी निभाई। इस अवसर पर बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक आनंद बंसल शाखा के मुख्य प्रबंधक अवधेश पारीक राकेश सैनी मंडी सचिव मोहन लाल जाट उपस्थित रहे। श्री बंसल ने बताया कि बैंक आगे भी अपनी सामाजिक सुरक्षा जिम्मेदारी निभाता रहेगा और ग्राहक सेवा में उत्तम कार्य करेगा।

जहाँ सारे भेष विसर्जित हो जाते हैं वहाँ दिगम्बर भेष जन्म लेता है - भावलिंगी संत दिगम्बराचार्य श्री विमर्श सागर जी

उत्तर प्रदेश बुढ़ाना. शाबाश इंडिया

समाधि सम्राट चक्रवर्ती आचार्य प्रवर श्री विरागसागर जी महामुनिराज का मनाया 43 वाँ महामुनि दीक्षा दिवस मनाया गया। समाधि सम्राट चक्रवर्ती, शुद्धोपयोगी संत, सूरिगच्छाचार्य, श्री 108 विराग सागर जी महामुनिराज का मनाया 43 वाँ मुनि दीक्षा दिवस बुढ़ाना धर्मनगर का जागा सौभाग्य। भावलिंगी संत आचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महासुनिराज ससंघ (35 पीछी) के सानिध्य में बुढ़ाना शहर के कृष्णा पैलेस में सम्पन्न हुआ विराग महोत्सव। 09 दिसम्बर 2025 मंगलवार को सम्पूर्ण भारत वर्ष में समाधि सम्राट चक्रवर्ती सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज का 43 वाँ मुनि दीक्षा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आचार्य गुरुवर के 500-550 शिष्य प्रशिष्यों ने धर्म समाजों के मध्य गुरुवर का संयमोत्सर मनाया। बुढ़ाना धर्मनगर में आयोजित गुरुबर के 43 में महामुनि दीक्षा दिवस पर भक्तों और शिष्यों की विनयांजलि के उपरांत आचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज ने अपने गुरुवर आचार्य प्रवर श्री विरामसागर जी महामुनिराज के इप चरणों में भाव विनयांजलि समर्पित करते हुए कहा - दिगम्बर मुनिराज किया था। आचार्य श्री ने बताया की यह पावन पवित्र जिनमुद्रा मात्र इस धरती पर ही भान्य नहीं है अपित यह जिनमुद्रा सम्पूर्ण तीनो लोको में वंदनीय अर्थनीय पूजनीय है। आज वह श्रेष्ठ दिवस है जब इस युवा के महान संत आचार्य गुरुवर विरागसागर जी महामुनिराज ने 09 दिसम्बर 1983 को महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद धर्म-नगरी में जिनेन्द्र भगवान के द्वारा प्रतिपादित सर्वश्रेष्ठ मुनि मुद्रा को धारण हमारे आचार्य गुरुदेव अत्यंत सरल स्वभारी ये, वे जहाँ से गुजर जाते थे वहीं से अनेकों युवा साथी सांसारिक भोग-विलासों को ठुकराकर वैराग्य पथ को अंगीकार कर लिया करते थे। आचार्य श्री ने प्रवचनों में कहा- बन्धुओं ! दिगम्बर भेष इस धरा पर अलौकिक हुआ करता है, जहाँ अन्य कोई वेशभूषा नहीं ओदी जाती आपल जहाँ सारे भेष विसर्जित हो जाते हैं वहां दिगम्बर शेष जन्म लेता है। आचार्य गुरुवर की साधना का माहात्म्य बताते हुए आचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज ने कहा. साधक ने अपने पूरे जीवन काल में कैसी उत्कृष्ट साधना की है यह उसका अन्तिम समय बताता है। आचार्य गुरुबर ने अपनी साधना का फल उत्कृष्ट समाधि के रूप में हमारे बीच प्रस्तुत किया बन्धुओ। आचार्य गुरुवर जैसी सर्वश्रेष्ठ समाधि दूर-दूर तक भी नहीं देखा जाता है। आज के शुभ दिवस पर हम सभी गुरुवर के चरखों में प्रवभक्ति सुत भाव विनयांजलि समर्पित करते है।

7 दिगम्बर जैन संत आर्यिका माताजी का चतुर्थ दीक्षा दिवस: पद्मपुराण पर आधारित जैन रामायण कथा का हुआ वाचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। मानसरोवर के एस एफ एस दिगम्बर जैन मंदिर में प्रवासरत आचार्य सुन्दर सागर महाराज के संघ के सात दिगम्बर जैन संत एवं आर्यिका माताजी, क्षुल्लिका माताजी का चतुर्थ दीक्षा दिवस समारोह बुधवार, 10 दिसम्बर को धूमधाम से मनाया जाएगा। इस मौके पर विनयांजलि सभा का आयोजन होगा। इससे पूर्व मंगलवार को आचार्य सुन्दर सागर महाराज के मुखारविंद से पद्मपुराण पर आधारित जैन रामायण कथा का वाचन किया गया। समिति अध्यक्ष कमलेश चन्द जैन एवं महामंत्री सोभाग मल जैन ने बताया कि इस मौके पर प्रातः आयोजित धर्म सभा में समाज श्रेष्ठी प्रवीण चंद जैन -उषा जैन ,गौरव जैन- प्रियंका जैन, अरिंजय जैन, आरायना जैन (डोसी परिवार टोंक वाले) सरस्वती एंक्लेव ने चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन किया। मंत्री कुणाल काला ने बताया कि बुधवार को मुनि सुलक्ष सागर, आर्यिका सुकाव्य मति, सुलक्ष्यमति, सुरम्यमति माताजी, क्षुल्लिका सुतथ्यमति, सुनम्य मति, सुपथ्य मति का चतुर्थ दीक्षा दिवस मनाया जाएगा।

रोज की दिनचर्या में आप अपनी लार को व्यर्थ न थूकें यह अमृत औषधि है...

सुबह उठकर क्या क्या किया जाये? आयुर्वेद के हिसाब से आप जब भी सुबह उठे तो सबसे पहले पानी पीयें। यानी कि दिन की शुरूआत आप पानी से करें। इसी चीज को ह्रउषापानह्व कहते हैं. उषापान का मतलब की सुबह चार बजे उठे और उठकर सबसे पहले पानी पीयें।

इसके दो कारण है पहला कारण ये है कि जब हम रात को सोकर सुबह उठते है तो हमारे मुंह में लार की मात्रा बहुत ज्यादा हो जाती है। और अगर हम पानी पी लेंगे तो ये लार अंदर चली जाएगी। इसलिए कभी भी सुबह उठकर दांत न धोएं और ना ही कुल्हा करें। क्योंकि ऐसा करने से वह लार बाहर थूकना पड़ जाता है। और सुबह की लार बहुत ज्यादा एल्कलाइन होती है। और शरीर में जाकर काफी सारे लाभ देती है। ये शरीर में जाकर पेट की सभी बिमारियों को खतम कर देगी, कटकी ये एसिड बनने नहीं देगी। और सभी बीमारियाँ पेट से ही शुरू होती है।

आयुर्वेद विद्वान लेखक डा राजीव दीक्षित जी ने अपने लेख में बताया कि सुबह की लार को जब टेस्ट करके उसका स्रँ निकाला तो वो 8.4 निकला,जिससे ये साबित होता है कि सुबह की बनी हुई लार में बहुत सारी मेडिसिनल प्रॉपर्टीज रहती हैं। बहुत सारे लोगो को आँखों के नीचे डार्क सर्किल हो जाते हैं तो उनको राजीव जी सुझाव दिया कि अगर आँखों के नीचे डार्क सर्किल ठीक नही हो रहे है तो सुबह-सुबह की बनी लार को डार्क जगह पर लगा कर हल्की मालिश कीजिये कुछ ही दिन में वह ठीक हो जायेंगे।

अगर किसी की आंखें कमजोर है और वो चश्मा हटाना चाहते हैं तो सुबह की लार को आँखों में काजल की तरह लगाईये आपका चश्मा उतर जायेगा। अगर शरीर में आपको कहीं चोट लग गयी है और वह जल्दी ठीक नही हो रही है तो वहां भी आप ये लार लगा दीजिये। असर बहुत जल्दी आपको दिखने लगेगा अगर किसी को पिम्पल्स या कील, मुंहासे और छायां हो जाये या उनका चेहरा बहुत खराब दिखने लगे तो ऐसे में उनको सुबह की लार चेहरे पर लगानी चाहिए ऐसा करने से उनके दाग भी मिट जायेंगे।

राजीव दीक्षित जी ने अपनी किताब में बताया कि एक बार उनके पास एक मरीज आया जिसका गर्म गर्म दूध से हाथ जल गया था। उसका जख्म तो ठीक हो गया लेकिन दाग नही गायब हो रहे थे और उस मरीज को किसी भी तरह से वो दाग मिटाना था। क्योंकि वो एक लड़की थी और उसकी शादी होने वाली थी उसके घरवाले परेशान थे कि ससुराल वालों ने देख लिया तो ना जाने क्या होगा। तो राजीव जी ने बोला की घरवालो को खुद ही बता दो सच तो लडकी का कहना था कि वह बता नही सकती

उन्हें उसका रिश्ता टूट ना जाये इसलिए उसको इस दाग से मुक्ति चाहिए। तो राजीव जी ने उस लडकी को लार लगाने की सलाह दी उस लडकी ने रोज लार लगाना शुरू कर दिया और 6-7 महीने में ही उसका दाग एकदम गायब हो गया।

आपको देखने में कभी आया है कि जानवरों को जब भी कभी चोट लगती है तो वह चाटने लगते हैं उस भाग को और चाट कर ही ठीक कर लेते हैं तो जानवरों का भी यही कहानी है जो मनुष्य की है।जानवरों की लार भी एल्केलाइन है और चोट को चाट कर ऐसे ही वह ठीक कर लेता है। गाय अपने बच्चे को चाट चाट कर उसकी सारी बीमारी मिटा देती है मनुष्य भी कर सकता है बस इसमें थोड़ा सेंसफुल होने की जरूरत है।

मेरे संपर्क में भी अभी कुछ पेशेंट ऐसे हैं जो कैंसर के लास्ट स्टेज में है उनके बचने की संभावना बिल्कुल ना के बराबर है क्योंकि उनकी लार ग्रंथियां बिल्कुल खत्म हो गई है अब उनको दूध भी पिलाओ चाय भी पिलाओ तो सब बाहर आ जाता है कुछ भी अंदर नहीं जाता क्योंकि लार ही नहीं है तो वह धनवान लोग मुझसे कहते हैं कुछ बता दो। मैं कहता हूं, ज्यादा पैसा है अगर आपके पास तो अमेरिका से इंपोर्ट करो, लार का पैकेट आता है अमेरिका में मिलता है।

अमेरिका रूस आदि में कुछ कंपनियां है जो लार का बिजनेस करती है वह मनुष्य का ही लार होता है जैसे शैंपू का पैकेट होता है ना, वैसे ही वह उसमें भरकर बेचते हैं 5 मिलीग्राम का 1 पैकेट ₹ 12000 का है तो वह दोनों पेशेंट हर दिन कम से कम 5 से 10 पैकेट कंज्यूम कर लेते हैं 60000 से 120000 खर्च करते हैं लेकिन स्थिति अगले दिन फिर वही हो जाती है मुंह पूरा का पूरा सूखा रहता है एक दूसरे के लार किसी दूसरे को काम नहीं आती लेकिन वह अपने संतोष के लिए करते जरूर है।

आजकल कुछ जीवन बीमा कंपनियों ने बीमा एक नई चीज अपने नियमो में जोड़ी है। वो किसी का जीवन बिमा करने से पहले आपके मुह की लार की जाँच करवाते है अगर उसमे एल्कलाइन कम हुआ तो वो बीमा नहीं करेंगे क्योकि उनको पता है आपके जीने के चांस वैसे ही कम है इसकी जानकारी आप इन्टरनेट पर ले सकते है।

भगवान ने आपको यह लार की व्यवस्था दी है तो इसको खराब मत करना यह व्यवस्था खराब कैसे होती है। लार सबसे ज्यादा कम तब बनती है जब आप किसी ऐसी वस्तु का उपयोग करें जो एंटी एल्केलाइन है। हमारे जीवन में आप जितने भी टूथपेस्ट करते हैं यह सब एंटी एल्केलाइन है यह सब आपके लार के उत्पन्न होने की क्षमता को घटा देते हैं कोलगेट हो ,क्लोजअप ,पेप्सोडेंट हो ,सिबाका हो यह सारे के सारे टूथपेस्ट ऐसे हैं जो एल्काइन को घटाते हैं इसलिए मेरी आप से रिक्वेस्ट है कि पेस्ट मत करिए क्योंकि आपकी लार बनना कम हो जाएगी।

आप कहेंगे पेस्ट में ऐसा क्या है जो लार को घटाता है। पेस्ट में एक केमिकल मिलाया जाता है जिसका नाम है सोडियम लॉरिंस सल्फेट यह सोडियम लारेल सल्फेट को जहर माना जाता है। ये लार ग्रंथि को सुखा देता है इसलिए दुनिया में जो भी अच्छे डेंटिस्ट होते हैं वे ब्रश पर कभी पेस्ट नहीं लगाना चाहिए की सलाह देते हैं। सब रोगों का इलाज लार हो सकता है. और इस लार को कभी कम न होने दे। इसलिए जब भी उठे सबसे पहले पानी पीयें ताकि लार की मात्रा ज्यादा से ज्यादा आपके अंदर जाए।पेस्ट के रूप में आयुर्वेद का दशन संस्कार मंजन और प्राकृतिक दातुन काम में ले ।

डा पीयूष त्रिवेदी आयुर्वेद विशेषज्ञ राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय बापू नगर एवं शासन सचिवालय जयपुर।